RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
नवंबर
04
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

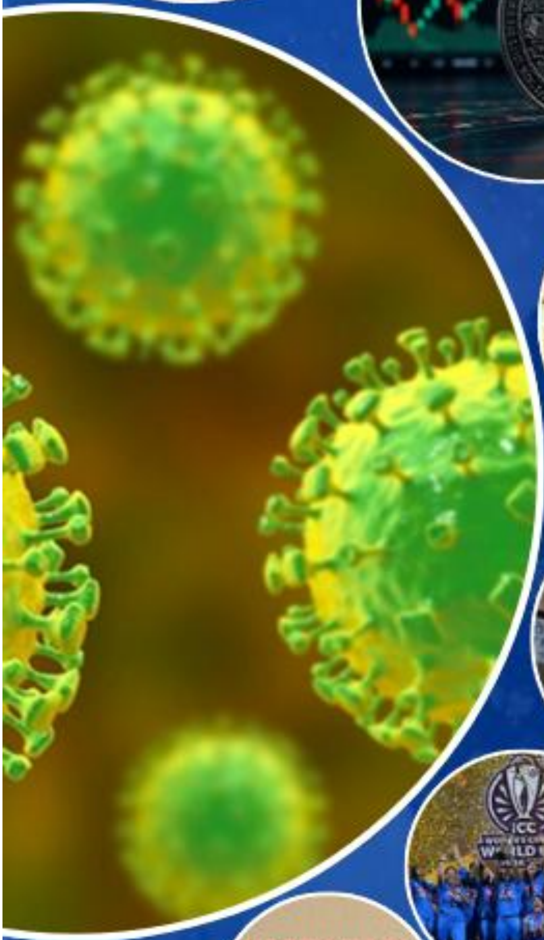

By Ankit Avasthi Sir

GSAT-7R मिशन / GSAT-7R Mission

संदर्भ:

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने 2 नवम्बर 2025 को भारतीय नौसेना के लिए उन्नत **GSAT-7R संचार उपग्रह** का सफल प्रक्षेपण किया। 4,410 किलोग्राम वजनी यह उपग्रह भारतीय धरती से प्रक्षेपित किया गया अब तक का **सबसे भारी संचार उपग्रह** है। यह मिशन भारतीय नौसेना की संचार क्षमता, समुद्री निगरानी और नेटवर्क-केंद्रित संचालन को और अधिक सशक्त बनाएगा।

GSAT-7R मिशन: भारत की समुद्री और अंतरिक्ष क्षमताओं को नई ऊंचाई:

मिशन और प्रक्षेपण विवरण:

- **आधिकारिक नाम:** उपग्रह को CMS-03 के नाम से भी जाना जाता है।
- **लॉन्च वाहन:** इसे LVM3-M5 रॉकेट (ISRO का सबसे शक्तिशाली परिचालन प्रक्षेपण यान) द्वारा सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा से जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट (GTO) में स्थापित किया गया।
- **रिकॉर्ड प्रक्षेपण:** सामान्यत: LVM3 की GTO क्षमता 4,000 किलोग्राम है, लेकिन इस मिशन के लिए ISRO ने इसकी प्रदर्शन क्षमता में 10% वृद्धि की, जिससे यह अधिक वजन वाले GSAT-7R उपग्रह को प्रक्षेपित कर सका।

उद्देश्य और लाभ: GSAT-7R एक उन्नत, स्वदेशी रूप से विकसित, मल्टी-बैंड कम्युनिकेशन सैटेलाइट है जो सुरक्षित और उच्च क्षमता वाले संचार बैंडविड्थ प्रदान करता है।

भारतीय नौसेना के लिए:

- **बेहतर संचार:** यह नौसेना के जहाजों, पनडुब्बियों, विमान और समुद्री संचालन केंद्रों के बीच निर्बाध वॉयस, डेटा और वीडियो कनेक्टिविटी सुनिश्चित करेगा।
- **रणनीतिक कवरेज:** यह उपग्रह पूरे हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में मजबूत दूरसंचार कवरेज प्रदान करेगा।
- **सिचुएशनल अवेयरनेस में सुधार:** यह नौसेना की Maritime Domain Awareness को बढ़ाकर रियल-टाइम समन्वित संचालन की क्षमता को सुदृढ़ करेगा।

भारत की रक्षा और अंतरिक्ष क्षमताओं के लिए:

- **पूर्ववर्ती उपग्रह का प्रतिस्थापन:** GSAT-7R ने 2013 में प्रक्षेपित GSAT-7 (रुक्मिणी) की जगह ली है, जो अपने परिचालन जीवन के अंत तक पहुंच चुका था।
- **स्वदेशीकरण की दिशा में कदम:** यह मिशन भारत की अंतरिक्ष रक्षा प्रणाली में आत्मनिर्भरता को बढ़ाता है और भारी उपग्रहों के लिए विदेशी प्रक्षेपण वाहनों पर निर्भरता घटाता है।
- **LVM3 की क्षमता में मजबूती:** यह प्रक्षेपण LVM3 रॉकेट की हैवी-लिफ्ट क्षमता को और प्रमाणित करता है, जो भविष्य के गगनयान मानव अंतरिक्ष मिशन जैसे अभियानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

लॉन्च व्हीकल मार्क-3 (LVM-3):

परिचय: LVM-3 (GSLV Mk-3 कहा जाता था) इसरो का सबसे शक्तिशाली परिचालन प्रक्षेपण यान है।

- यह ठोस, द्रव और क्रायोजेनिक ईंधन आधारित इंजनों का उपयोग करता है।
- यह रॉकेट निम्न पृथ्वी कक्षा (Low Earth Orbit - LEO) में 8,000 किलोग्राम और जियोसिंक्रोनस कक्षा (GTO) में 4,000 किलोग्राम तक का पेलोड प्रक्षेपित करने में सक्षम है।

मुख्य उपलब्धियाँ:

- **चंद्रयान-2** और **चंद्रयान-3** जैसे भारत के ऐतिहासिक चंद्र मिशनों का सफल प्रक्षेपण किया।
- गगनयान कार्यक्रम (2014) के तहत भारत का पहला क्रू मॉड्यूल पुन: प्रवेश परीक्षण के लिए प्रक्षेपित किया।
- **2022** में रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण वैश्विक लॉन्च विकल्पों की कमी के बीच **OneWeb** के **72 उपग्रहों** को LEO में प्रक्षेपित किया।
- इन सफलताओं के बाद इसरो ने इसे **"GSLV Mk-3" से "LVM-3"** के रूप में पुन: ब्रांड किया, जिससे इसकी बहुउद्देशीय क्षमता और अनुकूलनशीलता प्रदर्शित हुई।

उन्नयन और भविष्य की योजनाएँ:

- इसरो भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन और आगामी चंद्र अभियानों के लिए LVM-3 को और उन्नत कर रहा है।
- भविष्य में तरल चरण को सेमी-क्रायोजेनिक इंजन से बदलने की योजना है, जो शुद्ध केरोसिन और तरल ऑक्सीजन पर आधारित होगा।
- इन सुधारों से LVM-3 की पेलोड क्षमता LEO में 10,000 किलोग्राम तक बढ़ने की संभावना है।
- इसरो समानांतर रूप से लूनर मॉड्यूल लॉन्च व्हीकल (LMLV) भी विकसित कर रहा है, जो 80,000 किलोग्राम तक का भार वहन कर सकेगा।
- इन सभी प्रगतियों के साथ, LVM-3 भारत की डीप-स्पेस और मानव अंतरिक्ष उड़ान महत्वाकांक्षाओं का आधारस्तंभ बनकर उभरा है।

स्टेबलकॉइन्स / Stablecoins

संदर्भ:

हाल ही में वित्त मंत्री **निर्मला सीतारमण** ने **स्टेबलकॉइन (Stablecoin)** के नियमन में संतुलित दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि उचित निगरानी से **मौद्रिक स्थिरता की सुरक्षा**, **वित्तीय नवाचार को प्रोत्साहन**, और **डिजिटल अर्थव्यवस्था को सशक्त** बनाया जा सकता है।

स्टेबलकॉइन्स (Stablecoins): डिजिटल वित्तीय स्थिरता की नई दिशा-

परिचय:

- स्टेबलकॉइन्स एक प्रकार की क्रिप्टोकरेंसी होती हैं जिनका मूल्य किसी स्थिर परिसंपत्ति (asset) — जैसे फिएट मुद्रा (जैसे डॉलर या रुपया) या सोना — से जुड़ा होता है ताकि कीमतों में उतार-चढ़ाव सीमित रहे।
- इनका उद्देश्य बिटकॉइन जैसी अस्थिर क्रिप्टोकरेंसी की तुलना में एक स्थिर और विश्वसनीय विकल्प प्रदान करना है।
- आमतौर पर इनका उपयोग लेन-देन के बजाय निवेशकों द्वारा लाभ सुरक्षित रखने के लिए किया जाता है, ताकि वे क्रिप्टो मुनाफा निकालते समय उसे वास्तविक मुद्रा में बदले बिना सुरक्षित रख सकें।
- स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक के अनुसार, 2028 तक स्टेबलकॉइन बाजार का आकार दस गुना बढ़कर लगभग $2 ट्रिलियन तक पहुँच सकता है।

स्टेबलकॉइन्स के प्रकार:

1. **फिएट-समर्थित स्टेबलकॉइन (Fiat-collateralized):**
    - ये किसी फिएट मुद्रा (जैसे अमेरिकी डॉलर, यूरो, या रुपया) से जुड़ी होती हैं।
    - इनके पीछे की संस्था उतनी ही राशि का भंडार (reserve) रखती है, जिससे डिजिटल टोकन का मूल्य स्थिर रहता है।
2. **गैर-समर्थित या एल्गोरिदमिक स्टेबलकॉइन:** ये किसी भौतिक परिसंपत्ति से नहीं जुड़ी होतीं।
    - इनकी कीमत नियंत्रण एक सॉफ्टवेयर एल्गोरिद्म द्वारा किया जाता है जो मांग और आपूर्ति के अनुसार टोकन की संख्या बढ़ाता या घटाता है।
3. **क्रिप्टो-समर्थित स्टेबलकॉइन (Crypto-backed):**
    - इनका मूल्य अन्य क्रिप्टोकरेंसी से समर्थित होता है।
    - ये अत्यधिक विकेंद्रीकृत होती हैं, लेकिन उच्च अस्थिरता से बचाव हेतु अधिक कोलेटरल की आवश्यकता होती है।

भारत के लिए स्टेबलकॉइन्स का महत्व:

- **वित्तीय समावेशन:** स्मार्टफोन और डिजिटल वॉलेट के माध्यम से स्टेबलकॉइन बैंकिंग सेवाओं से वंचित लोगों को वित्तीय प्रणाली से जोड़ सकते हैं।
- **सस्ते रेमिटेंस:** भारत ने 2024 में लगभग $130 बिलियन का रेमिटेंस प्राप्त किया। स्टेबलकॉइन के माध्यम से लेन-देन शुल्क 6% से घटकर 2% तक हो सकता है, जिससे भारतीय परिवारों को लगभग $5 बिलियन की बचत होगी।
- **रुपये की स्थिरता:**रुपये से जुड़े स्टेबलकॉइनभारत की डॉलर पर निर्भरता घटा सकते हैं और घरेलू डिजिटल मुद्रा प्रणाली में विश्वास बढ़ा सकते हैं।
- **तकनीकी विकास:** विश्व के 11% ब्लॉकचेन डेवलपर्स भारत में हैं। स्टेबलकॉइन नवाचार से Web 3.0 और फिनटेक निवेश में तेजी लाई जा सकती है।
- **CBDC (e-Rupee) के साथ सामंजस्य:** स्टेबलकॉइन्स और RBI के डिजिटल रुपये (e-Rupee) के बीच एकीकरण से इंटरऑपरेबिलिटी, लेन-देन की गति, और डिजिटल वित्तीय ढांचे की मजबूती में सुधार होगा।

स्टेबलकॉइन से जुड़े जोखिम:

1. **नियामक कमी:** भारत में क्रिप्टो को वर्चुअल डिजिटल एसेट माना जाता है, लेकिन स्टेबलकॉइन जारी करने या उनकी सुरक्षा के लिए अलग कानून नहीं हैं।
2. **नीतिगत चिंता:** निजी स्टेबलकॉइन से RBI की *मौद्रिक* नीतियों पर नियंत्रण कमजोर हो सकता है।
3. **CBDC प्रतिस्पर्धा:** निजी स्टेबलकॉइन ई-रुपये के उपयोग को कम कर सकते हैं और लोगों की *सार्वभौमिक डिजिटल मुद्रा* में विश्वास घटा सकते हैं।
4. **संचालन जोखिम:** एल्गोरिदमिक *कॉइन* बाजार झटकों के प्रति संवेदनशील होते हैं, जबकि केंद्रीकृत जारीकर्ता अपने वास्तविक भंडार को गलत तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं।
5. **बाज़ार जोखिम:** 2022 में TerraUSD के पतन ने दिखाया कि स्टेबलकॉइन की असफलता से निवेशकों की बचत मिट सकती है और पूरा क्रिप्टो बाजार प्रभावित हो सकता है।

निपाह वायरस / Nipah virus

संदर्भ:

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) ने **निपाह वायरस** के विरुद्ध **स्वदेशी मोनोक्लोनल एंटीबॉडी (mAbs)** विकसित करने और निर्माण हेतु योग्य भारतीय कंपनियों से **रुचि अभिव्यक्ति (EoI)** आमंत्रित की है। यह पहल देश की घातक निपाह संक्रमण के प्रति प्रतिक्रिया क्षमता को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, विशेष रूप से स्थानीय रूप से विकसित उपचार के सफल पशु परीक्षणों के बाद।

ICMR की पहल के प्रमुख तथ्य:

- **पृष्ठभूमि:** भारत में 2001 से अब तक कई बार निपाह वायरस के प्रकोप दर्ज किए गए हैं, विशेष रूप से केरल राज्य में। इस वायरस की मृत्यु दर बहुत अधिक है, जिससे यह एक गंभीर ज़ूनोटिक खतरा बन गया है। वर्तमान में निपाह वायरस के लिए कोई लाइसेंस प्राप्त वैक्सीन या एंटीवायरल उपचार विश्व स्तर पर उपलब्ध नहीं है।
- **स्वदेशी विकास की आवश्यकता:**
    - एक प्रयोगात्मक मोनोक्लोनल एंटीबॉडी (m102.4) ने उपचार में आशाजनक परिणाम दिखाए हैं और केरल में मानवीय आधार (compassionate protocol) पर उपयोग की गई थी।
    - हालांकि, वैक्सीन उम्मीदवारों के लाइसेंस प्राप्त होने में अभी कई वर्ष लग सकते हैं।
    - ऐसे में स्वदेशी मोनोक्लोनल एंटीबॉडी (mAbs) का विकास भारत के लिए सबसे व्यवहारिक और त्वरित समाधान माना जा रहा है।
- **उद्देश्य:** इस पहल का लक्ष्य भारत की संक्रामक रोगों से निपटने की क्षमता को मजबूत करना और निपाह वायरस के विरुद्ध प्रभावी उपचार का स्वदेशी उत्पादन सुनिश्चित करना है।

ICMR की भूमिका और पहल का उद्देश्य:

- **ICMR की भूमिका:**
    - भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) ने अपने नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी (NIV), पुणे के माध्यम से उन्नत प्रयोगात्मक कार्य और सफल पशु परीक्षण पूरे कर लिए हैं।
    - ICMR चयनित औद्योगिक साझेदारों को अनुसंधान, विकास और निर्माण की पूरी प्रक्रिया में तकनीकी मार्गदर्शन और विशेषज्ञ सहयोग प्रदान करेगा।
    - ICMR-NIV के पास अत्याधुनिक BSL-3 और BSL-4 प्रयोगशालाएं हैं, जिन्हें प्रीक्लिनिकल अध्ययन और वैक्सीन उम्मीदवारों के विकास में उपयोग किया जाएगा।

EoI (Expression of Interest) का उद्देश्य:

- योग्य भारतीय संगठनों, कंपनियों और निर्माताओं को आमंत्रित करना ताकि वे ICMR के साथ मिलकर स्वदेशी मोनोक्लोनल एंटीबॉडी (mAbs) का विकास और निर्माण कर सकें।
- यह साझेदारी वाणिज्यिक उत्पादन को तेज करने और भविष्य के प्रकोपों के दौरान स्थानीय आपूर्ति सुनिश्चित करने में सहायक होगी।

मोनोक्लोनल एंटीबॉडी (mAbs) के रूप में उपचार:

- ये प्रयोगशाला में तैयार किए गए प्रोटीन अणु हैं जो प्रतिरक्षा प्रणाली की प्राकृतिक एंटीबॉडी की तरह काम करते हैं और हानिकारक रोगजनकों से सुरक्षा प्रदान करते हैं।
- इन्हें संक्रमण के बाद की रोकथाम या प्रारंभिक उपचार के रूप में दिया जा सकता है।
- mAbs रोग की शुरुआत को रोकने और रोगियों में वायरल लोड को कम करने की क्षमता रखते हैं।

निपाह वायरस (Nipah Virus - NiV): प्रमुख जानकारी

वायरस का परिचय:

- निपाह वायरस (NiV) एक पैरामाइक्सोवायरस है, जो जानवरों से इंसानों में फैलने वाला (ज़ूनोटिक) रोगजनक है।
- यह गंभीर और कभी-कभी घातक वायरल संक्रमण है, जिसकी मृत्यु दर 40% से 75% तक हो सकती है।
- इसका पहला प्रकोप 1998 में मलेशिया में दर्ज किया गया था, जिसके बाद बांग्लादेश और भारत में भी इसके कई प्रकोप सामने आए।

संक्रमण का स्रोत:

- यह वायरस फल खाने वाले चमगादड़ों (Pteropus bats) से मनुष्यों या अन्य जानवरों (जैसे सूअर) में फैल सकता है।
- संक्रमित व्यक्ति के शारीरिक तरल पदार्थों के संपर्क में आने से मानव-से-मानव संक्रमण भी संभव है।

निपाह वायरस के लक्षण:

संक्रमण के कुछ दिनों बाद लक्षण दिखाई देते हैं।

- **प्रारंभिक लक्षण फ्लू जैसे होते हैं, जिनमें शामिल हैं:** तेज बुखार, गंभीर सिरदर्द, चक्कर आना और भ्रम, सांस लेने में तकलीफ, उल्टी, गर्दन में अकड़न
- **गंभीर मामलों में:** मस्तिष्क में सूजन (एन्सेफलाइटिस), दौरे, कोमा और मृत्यु तक की स्थिति हो सकती है।

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन / National Beekeeping & Honey Mission

संदर्भ:
भारत का **मधु उत्पादन क्षेत्र** एक संगठित परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, क्योंकि **राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं मधु मिशन (NBHM)** देशभर में **वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन** को व्यापक स्तर पर प्रोत्साहित कर रहा है। यह पहल किसानों की आय बढ़ाने, पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने और शुद्ध मधु उत्पादन को बढ़ावा देने की दिशा में एक अहम कदम है।

National Beekeeping and Honey Mission (NBHM): प्रमुख जानकारी-

परिचय: यह एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना (Central Sector Scheme) है, जिसे भारत सरकार ने वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन (Scientific Beekeeping) और गुणवत्तापूर्ण शहद व अन्य छत्ते से प्राप्त उत्पादों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया।

- **कार्यान्वयन एजेंसी:** इसे नेशनल बी बोर्ड (National Bee Board – NBB) के माध्यम से लागू किया जा रहा है।
- **लॉन्च और बजट:**
  - योजना को आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत वर्ष 2020–21 से 2022–23 के लिए ₹500 करोड़ के कुल बजट के साथ शुरू किया गया था।
  - इसे आगे तीन वर्षों (2023-24 से 2025–26) के लिए बढ़ाया गया है, जिसमें मूल आवंटन से ₹370 करोड़ की शेष राशि का उपयोग किया जाएगा।
- **मुख्य उद्देश्य:**
  - देश में "स्वीट रिवॉल्यूशन (Sweet Revolution)" को प्रोत्साहन देना।
  - मधुमक्खी पालन को वैज्ञानिक, संगठित और व्यावसायिक रूप से विकसित करना।
  - कृषकों की आय बढ़ाना तथा गुणवत्तापूर्ण शहद के उत्पादन और निर्यात को सशक्त बनाना।

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (NBHM) के प्रमुख उद्देश्य:

- **समग्र उद्योग विकास:** मधुमक्खी पालन क्षेत्र के समग्र विकास को बढ़ावा देना ताकि किसानों की आय और रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो सके।
- **अवसंरचना विकास:** न्यूक्लियस स्टॉक उत्पादन, शहद प्रसंस्करण, पैकेजिंग और ब्रांडिंग के लिए आवश्यक सुविधाएं और केंद्र स्थापित करना।
- **गुणवत्ता और सुरक्षा सुनिश्चित करना:** शहद गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशालाएं और रोग निदान केंद्र स्थापित करना ताकि शहद और मधुमक्खी उत्पादों की गुणवत्ता और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।
- **डिजिटल ट्रेसबिलिटी:** ब्लॉकचेन आधारित डिजिटल प्रणाली लागू करना ताकि शहद की उत्पत्ति और शुद्धता का डिजिटल सत्यापन किया जा सके।
- **हनी कॉरिडोर और उद्यमिता प्रोत्साहन:** हनी कॉरिडोर (Honey Corridors) विकसित करना और कृषि-आधारित उद्यमिता व एपिकल्चर स्टार्टअप्स को बढ़ावा देना।

शहद उत्पादन की वर्तमान स्थिति:

- **उत्पादन (2024):** लगभग 1.4 लाख मीट्रिक टन प्राकृतिक शहद का उत्पादन हुआ।
- **मुख्य उत्पादक राज्य:** उत्तर प्रदेश (17%), पश्चिम बंगाल (16%), पंजाब (14%), बिहार (12%), और राजस्थान (9%) प्रमुख शहद उत्पादक राज्य हैं।
- **वैश्विक स्थिति:**
  - भारत अब प्राकृतिक शहद का दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश बन गया है (पहले स्थान पर चीन है)।
  - वर्ष 2020 में भारत 9वें स्थान पर था।
- **निर्यात (वित्त वर्ष 2023–24):**
  - 1.07 लाख मीट्रिक टन प्राकृतिक शहद का निर्यात किया गया, जिसकी कीमत 177.52 मिलियन अमेरिकी डॉलर थी।
  - तुलना में, वित्त वर्ष 2020-21 में यह 59,999 मीट्रिक टन और 96.77 मिलियन डॉलर था।
- **मुख्य निर्यात गंतव्य:** अमेरिका, यूएई, सऊदी अरब, कतर और लीबिया भारत के प्रमुख शहद आयातक देश हैं।

राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (National Bee Board - NBB):

- **स्थापना:** वर्ष 2000 में सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1860 के तहत की गई। इसे स्मॉल फार्मर्स एग्री-बिजनेस कंसोर्टियम (SFAC) द्वारा प्रोत्साहित किया गया था।
- **पुनर्गठन:** वर्ष 2006 में इसे कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अंतर्गत पुनर्गठित किया गया।
- **मुख्यालय:** नई दिल्ली
- **अध्यक्ष:** कृषि एवं सहयोग विभाग के सचिव
- **मुख्य उद्देश्य (Mandate):**
  - वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन, फसल परागण और गुणवत्तापूर्ण शहद उत्पादन को बढ़ावा देना।
  - राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (NBHM) के कार्यान्वयन की नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करना।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन / EPFO

संदर्भ:

केंद्र सरकार ने **कर्मचारी नामांकन योजना 2025 (Employee Enrollment Scheme 2025)** की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य कर्मचारियों को कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) के तहत स्वैच्छिक रूप से नामांकित करना है। यह पहल संगठित क्षेत्र के कवरेज को बढ़ाने और कर्मचारियों को सामाजिक सुरक्षा लाभों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) की नई योजना के बारे में:

परिचय:

- यह योजना **केंद्रीय श्रम मंत्री** द्वारा **ईपीएफओ (EPFO)** के **73वें स्थापना दिवस** के अवसर पर शुरु की गई।
- यह **1 नवंबर 2025** से प्रभावी हुई है और इसका उद्देश्य नियोक्ताओं को प्रोत्साहित करना है कि वे अपने पात्र कर्मचारियों को **स्वेच्छा से घोषित कर ईपीएफ में पंजीकृत करें**।

पात्रता और प्रक्रिया:

- नियोक्ता **1 जुलाई 2017 से 31 अक्टूबर 2025** के बीच नियुक्त हुए उन कर्मचारियों को नामांकित कर सकते हैं, जिन्हें किसी कारणवश **कर्मचारी भविष्य निधि (EPF)** में शामिल नहीं किया गया था।
- नियोक्ताओं को कर्मचारी के हिस्से का अंशदान (यदि पहले नहीं काटा गया) **नहीं देना होगा**।
- उन्हें केवल **अपने हिस्से का अंशदान** और **₹100 का नाममात्र दंड (penalty)** देना होगा।

महत्व:

- यह योजना नियोक्ताओं को **कानूनी कार्रवाई या भारी जुर्माने के डर के बिना** अपने कर्मचारियों को नियमित करने का अवसर देती है।
- केवल अपने हिस्से का अंशदान और न्यूनतम शुल्क देकर नियोक्ता **श्रम कानूनों के अनुपालन** को सुनिश्चित कर सकते हैं।
- कर्मचारियों के लिए यह योजना सामाजिक सुरक्षा, रिटायरमेंट सेविंग्स और ईपीएफ लाभों तक पहुंच प्रदान करती है।

महिला क्रिकेट विश्व कप / Women's Cricket World Cup

संदर्भ:

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने 2025 में अपना पहला **ICC विश्व कप** खिताब जीतकर इतिहास रच दिया।

- **नवी मुंबई** में खेले गए फाइनल मुकाबले में भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 52 रनों से पराजित किया।
- यह जीत भारत के लिए ODI और T20I दोनों प्रारूपों में पहला विश्व खिताब है, जिसने भारतीय महिला क्रिकेट के गौरवशाली अध्याय में एक नई उपलब्धि जोड़ी।

महिला क्रिकेट विश्व कप (Women's Cricket World Cup) के बारे में:

- **आयोजन संस्था:**
  - अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC) द्वारा आयोजित किया जाता है।
  - वर्ष 2005 से पहले यह इंटरनेशनल वुमेन्स क्रिकेट काउंसिल (IWCC) द्वारा संचालित किया जाता था।
- **शुरुआत:**
  - पहला महिला क्रिकेट विश्व कप 1973 में इंग्लैंड में आयोजित हुआ था – जो पुरुषों के पहले विश्व कप (1975) से दो वर्ष पहले हुआ।
  - **पहला विजेता:** इंग्लैंड।
- **ऐतिहासिक महत्व:**
  - यह महिलाओं के खेलों में दूसरा सबसे पुराना विश्व चैम्पियनशिप टूर्नामेंट है (पहला – महिला हॉकी विश्व कप)।
- **फॉर्मेट:** वन डे इंटरनेशनल (ODI) प्रारूप में खेला जाता है – प्रत्येक टीम के 50 ओवर।
- **टूर्नामेंट संरचना:** राउंड-रॉबिन और नॉकआउट चरणों में मुकाबले खेले जाते हैं।
- **आवृत्ति:** हर चार वर्ष में आयोजित किया जाता है।
- **सबसे सफल टीम:**
  - **ऑस्ट्रेलिया** – 7 खिताब (2025 तक)।
  - **इंग्लैंड** – 4 खिताब।
- **अन्य विजेता देश:** न्यूज़ीलैंड (1 खिताब) और भारत (1 खिताब)।

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
इतिहास
अर्थव्यवस्था
भूगोल
भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था
1500x4
₹6000/-
₹4500/-
रोज़ाना लाइव क्लासेस
साप्ताहिक टेस्ट
क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
लाइव डाउट सेशन
रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न
COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF STOCK MARKET

LEARN HOW TO TRADE

FOUNDATION COURSE OF MUTUAL FUND

INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH

COMBO OFFERS

COURSE FEE

~~₹4000/-~~

OFFER PRICE

₹2800/-

Course Validity 1 YEAR

BBK Baaten Bazaar ki

एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात
Baaten Bazar Ki
Ankit Inspires India

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..
Baaten Bazar Ki

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE
+ (FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)
BBK
EMI AVAILABLE
FREE
» Long-Term Investing Foundations
» Principles of Value Investing and Stock
» Portfolio Construction Mastery
» Sectoral Investing
» Stock Picking Framework
» Active Portfolio Management Techniques
» Mega Cap vs Mid Cap Strategy
SPECIAL BONUS
COURSE VALIDITY
1 YEAR